School → SHRI JAI GOVIND GOPINATH Hr. Sec. Scho
Name → Naincy Dutt   Age → 15 yrs.   Class → XII B

6/30

1

हिंसा और मैं

हिंसा विभिन्न प्रकारों से हमारे देश में विराजमान एक अभिशाप है। हिंसा हमारे समाज रूपी वट वृक्ष को खोखला करने वाला दीमक रूपी कीड़ा है। हिंसा व्यक्ति की मनोदशा को बुरी तरह प्रभावित करती है। यह एक नहीं विभिन्न प्रकार की होती है जैसे धार्मिक हिंसा शारीरिक हिंसा, मानसिक हिंसा, आर्थिक हिंसा आदि। हमारे समाज में वर्तमान समय मे यह सभी हिंसाएँ प्रमुख रूप से विराजमान हैं। खासतौर पर मानसिक हिंसा व शारीरिक हिंसा। आज यदि नारियों पर इतने अत्याचार हो रहे हैं, घरेलू हिंसा जैसे कुकर्मों में बढ़ोतरी हो रही है तो इसका मुख्य कारण लोगों की छोटी मानसिकता है। हिंसा लोगों की छोटी मानसिकता, पुरानी सोच के कारण होती है। मानसिक हिंसा लोगों के मन को बुरी तरह प्रभावित करती है और कई पुष्प मात्र और मात्र हिंसा के कारण खिलने से पहले ही मुरझा जाते हैं। लोग कड़वी बातें कर धर्म, रंग-रूप आदि का भेदभाव कर ऐसे छोटे और तुच्छ तथ्यों के आधार पर लोगों को मानसिक तनाव देते हैं और उनकी सारी अच्छाईयों का नाश करते हैं और सिर्फ इसी राक्षसी रूपी हिंसा के कारण आज हमारे देश के आधार हमारे युवा आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं। हिंसा का कारण, मुख्यतौर पर लोगों में खत्म हो चुकी इंसानियत है। आज लोगों में न ही किसी के प्रति प्यार है न सम्मान और यही कारण है कि वह हिंसा करने लगते हैं और यदि कुछ लोगों मे प्यार, मानवता आदि जैसे सद्‌गुण बचे भी हैं तो हिंसा करने वाले लोग इन्हें अपनी हिंसा का शिकार बना लेते हैं। हिंसा हमारे देश के विकास मार्ग पर गहरी खाई के रूप में विराजमान है। यही हिंसा है जिसके कारण

आज मृत्यु दर में इतनी बढ़ोतरी हो रही है।

वर्तमान में अखबार में एक खबर आई थी कि अमुक परिवार ने अपनी बेटी के प्रेम विवाह के विरोध में रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व पर उसे व उसके पति को घर बुलाकर इन्हें मारना पीटना शुरू कर दिया और अपनी गर्भवती बेटी के ऊपर सीमेंट के पत्थरों का प्रहार किया जिसके कारण लड़की का गर्भपात व उसके पति की मृत्यु हो गई। और जब लड़की को अपने पति की मृत्यु का पता लगने पर वह मानसिक हिंसा का शिकार हो गई।

तो, इस तरह हिंसा सिर्फ हिंसा को ही जन्म देती है। आज यदि एसिड अटैक जैसी शारीरिक हिंसा हो रही है तो इसका कारण है सिर्फ और सिर्फ लोगों में खत्म हो चुकी मानवता और इनकी दुषित सोच है जो आज भारतीय समाज को कलंकित कर रही है।

यदि हमें हिंसा को समूल नष्ट करना है तो लोगों में खत्म हो चुकी मानवता को वापस जगाना होगा। इन्हें आभास कराना होगा कि हिंसा जैसे कुकर्म तो जानवर भी नहीं करते फिर हम सभी तो इन्सान है जिन्हें ईश्वर ने सृष्टि को सँवारने हेतु भेजा है उस पर ईश्वर के द्वारा भेजे हुए लोगों पर हिंसा करने हेतु नहीं। हम सभी को अपनी विचार शक्ति में वृद्धि करनी होगी, अपनी नैतिकता को जगाना होगा।

वर्तमान स्थिति को देखकर तो ऐसा लगता है कि हमें बच्चों को नैतिक शिक्षा के रोज एक पाठ पढ़ाने होंगे।

हिंसा को कम करने में मीडिया भी एक महत्वपूर्ण अंग बन सकता है। हमारी सरकारें को भी हिंसा के विरुद्ध सख्त कानून बनाने की आवश्यकता है ताकि भय के कारण ही लोग हिंसा कम कर दें।

और अन्त में - अगर हमें मानवता को कायम रखना है तो हिंसा को खत्म करना होगा

॥ जय हिंद, जय भारत ॥